

भारत का चंद्रयान-3 और रूस का लूना 25 मशिन

प्रलिस के लयल:

चंद्रयान-3, लूना 25, ग्लोनास नेवगलशन ससल्टम, आर्यभट्ट मशलन, **गगनयान**, सोयुज रॉकेट, USSR का इंटर-कॉसमॉस कार्यक्रम

मेन्स के लयल:

लूना 25 और चंद्रयान 3 मशलन में अंतर

चरचा में क्यों?

रूस का लूना 25 मशलन, जसल 10 अगस्त, 2023 को सोयुज रॉकेट पर लॉन्च कयल गयल, का लक्ष्य **भारत के चंद्रयान-3** से कुछ दनल पहले चंद्र दक्षलणी धरुव (Lunar South Pole) के करीब सॉफ्ट-लैंडलंग करना है ।

- रूसी अंतरक्षल एजेंसी **रॉसकॉसमॉस** ने घोषणा की है कल लूना 25 की लैंडलंग से चंद्रयान-3 पर कोई असर नहीं पड़ेगा, कयोंकल दोनों के लैंडलंग क्षेत्तर अलग-अलग हैं ।

चंद्रयान-3 से पहले लूना 25 की चंद्रमा पर पहुँच:

- प्रत्यक्ष प्रक्षेप पथ का लाभ: चंद्रयान-3 की तुलना में लगभग एक महीने बाद लॉन्च होने के बावजूद लूना 25 अपने अधिकप्रत्यक्ष प्रक्षेप पथ (Direct Trajectory) के कारण चंद्रमा पर पहले पहुँचने में सक्षम है ।
- पेलोड और ईंधन भंडारण: लूना 25 का 1,750 कलोग्राम का लफ़्ट-ऑफ़ द्रव्यमान चंद्रयान-3 के 3,900 कलोग्राम की तुलना में काफी हल्का है, जो तेज़ गतल से यात्रा करने हेतु महत्त्वपूर्ण है ।
- चंद्रयान-3 का घुमावदार मार्ग: चंद्रयान-3 ने कम ईंधन भंडार की भरपाई के लयल चंद्रमा की ओर उड़ान भरने से पहले वेग उत्पन्न करने के लयल एक दीर्घ मार्ग अपनाया, जसलमें वेग उत्पन्न करने हेतु युक्तयल शामिल थीं ।
 - इससे **चंद्रमा की कक्षा (Lunar Orbit)** तक इसकी यात्रा में 22 दनल की बढ़ोतरी हुई ।
- लूनर डाउन टाइमलंग (Lunar Dawn Timing): अपने लैंडलंग स्थल पर चंद्रोदय से पहले लैंड करने के कारण लूना 25 के पेलोड को पूरे चंद्र दवलस (पृथ्वी के 14 दनल के बराबर) के दौरान सौर पैनल के माध्यम से पूरण ऊर्जा प्राप्त होगी ।

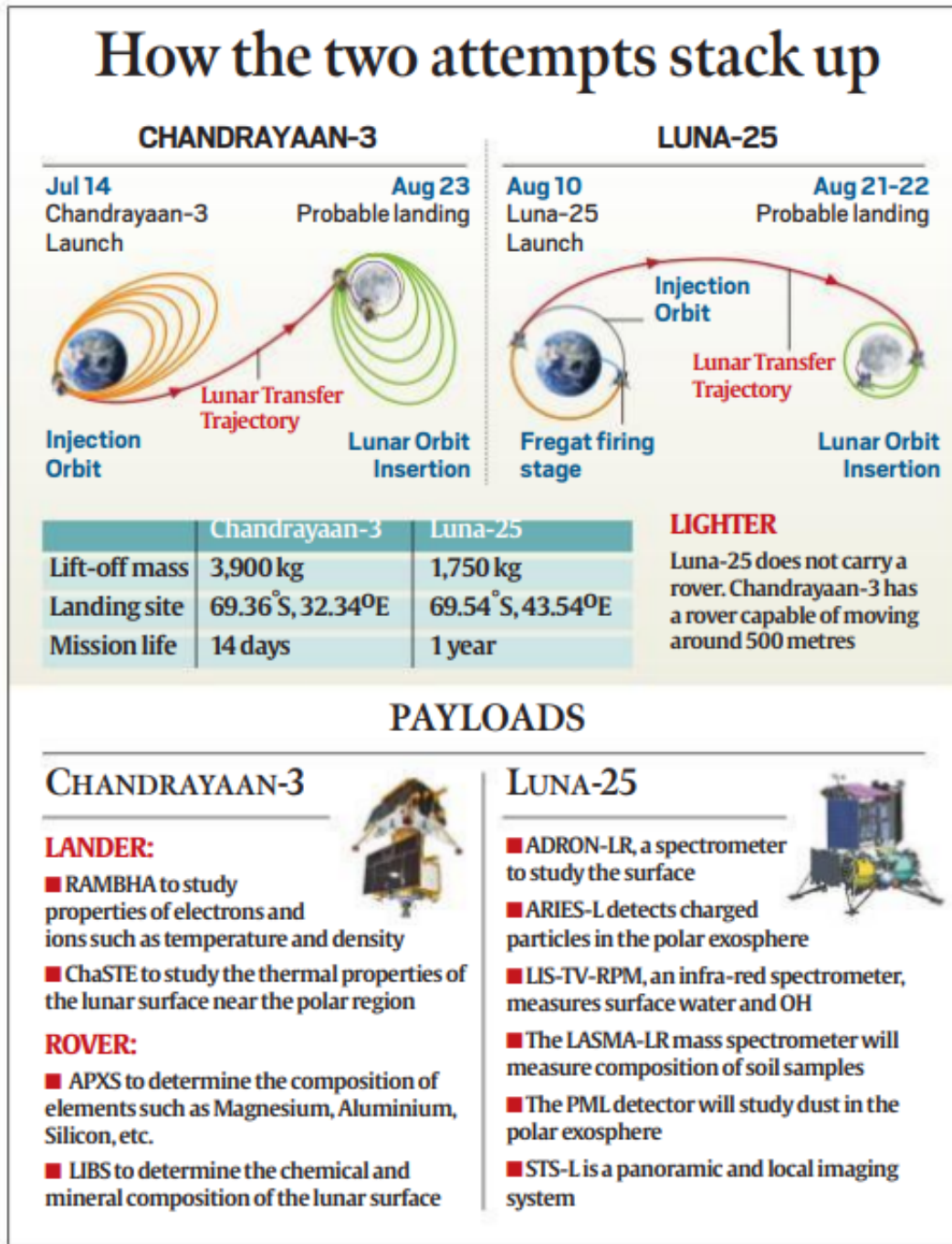
नोट: इतलहास में केवल तीन देश ही चंद्रमा पर सॉफ्ट लैंडलंग करने में सफल रहे हैं: संयुक्त राज्य अमेरलका, सोवयलत संघ और चीन ।

लूना 25 और चंद्रयान-3 के मध्य अन्य अंतर:

- परचयल: लूना 25, 47 वर्षों के बाद रूस की चंद्र अन्वेषण में वापसी का प्रतीक है, जसलका लक्ष्य अंतरक्षल अन्वेषण में अपनी प्रतषलठा को पुनः प्राप्त करना है ।
 - चंद्रयान-3 भारत का तीसरा चंद्र मशलन और चंद्रमा की सतह पर सॉफ्ट लैंडलंग का दूसरा प्रयास है ।
- पेलोड अंतर: लूना 25 हल्का है और इसमें रोवर का अभाव है, जो मटल्टी की संरचना, धूल के कणों का अध्ययन करने और सतह के पानी का पता लगाने पर ध्यान केंद्रलत करता है ।
 - चंद्रयान-3 में एक रोवर है जो 500 मीटर तक चलने में सक्षम है, इसका लक्ष्य चंद्रमा पर मटल्टी का अध्ययन करना है और इसमें चंद्रमा के दक्षलणी धरुव के पास छाया वाले गड्ढों में पानी-बरफ का पता लगाने के लयल उपकरण हैं ।
- जीवनकाल: लूना 25 को एक साल के मशलन के लयल डज़लइन कयल गयल है, जो हीटलंग तंत्र और एक गैर-सौर ऊर्जा स्रोत से सुसज्जतल है ।
 - इसके वपलरीत चंद्र रात के दौरान हीटलंग की कमी के कारण **चंद्रयान-3 को एक चंद्र दवलस** के लयल बनाया गयल है ।
- मशलन का उद्देश्य: रूसी लैंडर के पास मुख्य रूप से **आठ पेलोड** हैं, जनलका मुख्य उद्देश्य मटल्टी की संरचना, धरुवीय बाह्यमंडल में धूल के कणों

का अध्ययन करना और सबसे महत्वपूर्ण रूप से सतह पर पानी का पता लगाना है।

- भारतीय मशिन में चंद्रमा पर मट्टी के साथ-साथ पानी-बर्फ का अध्ययन करने के लिये वैज्ञानिक उपकरण भी हैं। दक्षिणी ध्रुव के पास का स्थान इसलिये चुना गया क्योंकि वहाँ स्थायी छाया में रहने वाले गड्ढे उपस्थित होते हैं, जसिसे पानी-बर्फ मलिन की संभावना बढ़ जाती है।
- यह लैंडर RAMBHA, ChaSTE, ILSA और लेज़र रेट्रोरेफ्लेक्टर एरे की सहायता से चंद्रमा की सतह पर प्रयोग/अध्ययन करेगा।
- रोवर दो वैज्ञानिक तकनीकों से लैस है:
 - लेज़र एंड्यूस्ड ब्रेकडाउन स्पेक्ट्रोस्कोप (LIBS)।
 - अल्फा पार्टिकल एक्स-रे स्पेक्ट्रोमीटर (APXS)।



भारत और रूस के बीच अंतरिक्ष क्षेत्र में सहयोग की स्थिति:

- भारत के पहले उपग्रह, आर्यभट्ट को वर्ष 1975 में सोवियत संघ द्वारा लॉन्च/प्रक्षेपित किया गया था।
- USSR के इंटर-कॉसमॉस कार्यक्रम के हिससे के रूप में वर्ष 1984 में सैल्यूट 7 अंतरिक्ष स्टेशन के लिये सोयुज़ रॉकेट ने उड़ान भरी थी। राकेश शर्मा इस रॉकेट से अंतरिक्ष में जाने वाले एकलौते भारतीय नागरिक हैं।

- वर्ष 2004 में दोनों देशों ने अंतरिक्ष क्षेत्र में सहयोग को बढ़ावा देने के लिये एक प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर किये। इसमें ग्लोनास नेविगेशन प्रणाली का विकास और भारतीय रॉकेटों द्वारा रूसी ग्लोनास उपग्रहों का प्रक्षेपण शामिल था।
- शुरू में ऐसा माना जा रहा था कि चंद्रयान-2 मशिन को भारत और रूस के संयुक्त सहयोग से पूरा किया जाएगा।
 - हालाँकि रूस द्वारा [चंद्रयान-2](#) के लिये लैंडर-रोवर को डिज़ाइन करने से मना किये जाने पर भारत को इसे स्वतंत्र रूप से विकसित करना पड़ा।
- इसके अतिरिक्त भारत के पहले मानवयुक्त अंतरिक्ष मशिन: [गगनयान](#) का हिससा बनने वाले चार अंतरिक्ष यात्रियों को रूसी अनुसंधान केंद्रों में प्रशिक्षित किया गया है।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

प्रश्न. अंतरिक्ष विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत की उपलब्धियों पर चर्चा कीजिये। इस प्रौद्योगिकी का प्रयोग भारत के सामाजिक-आर्थिक विकास में किस प्रकार सहायक हुआ है? (2016)

[स्रोत: द हिंदू](#)

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/india-s-chandrayaan-3-and-russia-s-luna-25-mission>

